गद्यांश पर आधारित —

बाजार में एक ---- --- गोल्डम हैरा(?)

पृष्ठ संख्या - 88

1. बाजार का जादू 'आँख की राह' पर किस तरह काम करता है?

उत्तर- बाजार का जादू 'आँख की राह से इस तरह काम करता है कि बाजार में सजी सुंदर वस्तुओं को हम आँखों से देखते है और उनकी सुंदरता पर मोहित होकर आवश्यकता ना होने पर भी उन्हें खरीदने के लिए लालायित हो उठते हैं।

2- क्या आप भी 'बाजार के जादू' में फँसे है? अपना अनुभव लिखिए जब आप न चाहने पर भी सामान खरीद लेते है?

उत्तर - हाँ, मैं भी बाजार के जादू में फँसा हूँ। एक बार एक बड़े मॉल में प्रदर्शित मोबाइल फोनों को देखकर मन उसकी ओर आकर्षित हो गया। यद्यपि मेरे पास फोन था तथापि मैंने 15,000 रुपए का फोन अनावश्यक खरीद लिया।

3- कमजोर इच्छा शक्ति वाले लोग बाजार के जादू से मुक्त नहीं हो सकते? तर्क सहित उत्तर दीजिए?

उत्तर- जिन लोगों की इच्छा शक्ति कमजोर होती है, वे बाजार की जादू से मुक्त नहीं हो पाते। ऐसे लोग अपने मन पर नियंत्रण न रख पाने के कारण बाजार की जादू का बहुत आसानी से शिकार हो जाते हैं।

संकेत -

लोभ का यह जीतना _ _ _ _ _ _ _ _ _ करना नहीं चाहिए

पृष्ठ - [redacted], ८९

1- लेखक के अनुसार लोभ की जीत क्या है तथा आदमी की हार क्या है?

उत्तर- लोभ को नकारना लोभ की ही जीत है क्योंकि लोग लोभ को नकारने के लिए लोग मन को मारते हैं। उनका यह नकारना स्वैच्छिक नहीं होता। इसके लिए वे योग का नहीं, हठयोग का सहारा लेते हैं। इस तरह यह लोभ की ही जीत होती है।

2. आँख फोड़ डालने का क्या अर्थ है? उससे मनुष्य पर क्या असर पड़ेगा?

उत्तर- आँख फोड़ डालने का अर्थ बलपूर्वक अपनी आँखें बंद करना है। पर इससे हम लोभ से नहीं बच पाते बल्कि बाह्य रूप की अनुभूति हमें और बेचैन कर देती है।

3- हठयोग का क्या प्रभाव होता है?

उत्तर- हठयोग से मन कमजोर, पीला और अशक्त हो जाता है। इससे मन संकीर्ण हो जाता है इसलिए मन का रोग-रोम बंद करके मन को रोकने का प्रयास नहीं करना चाहिए।

संकेत - उस बल का - - - - - - जड़ की विजय
पृष्ठ - 90 - 91

1- उस बल से क्या तात्पर्य है? उसे किस जाति का तत्व बताया है तथा क्यों?

उत्तर- उस बल से तात्पर्य है - बाज़ार में वस्तु खरीद के निश्चय का निर्णय। लेखक ने इस बल को उच्च जाति का बताया है क्योंकि आम व्यक्ति आकर्षण के कारण ही निरर्थक वस्तुएँ खरीदता है।

2- व्यक्ति की निर्बलता किससे प्रमाणित होती है और क्यों?

उत्तर- व्यक्ति की निर्बलता संचय की तृष्णा और वैभव की चाह से प्रमाणित होती है क्योंकि निर्बल व्यक्ति ही धन के आकर्षण में बंधता है।

3- मनुष्य पर धन की विजय चेतन पर जड़ की विजय कैसे है?

उत्तर- मनुष्य चेतन है तथा धन जड़। मनुष्य धन की चाह में उसके (जड़) के वश में हो जाता है। इसी कारण जड़ की चेतन पर विजय हो जाती है।

H.W. Assignment -

(1)- बाज़ार - दर्शन पाठ में किस प्रकार के ग्राहकों की बात हुई है। आप स्वयं को किस श्रेणी का ग्राहक मानते / मानती हैं?

2- आप अपने तथा समाज में कुछ ऐसे प्रसंग का उल्लेख करें-
(क)- जब पैसा शक्ति के परिचायक रूप में प्रतीत हुआ।
(ख)- जब पैसे की शक्ति काम नहीं आई।